DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
B.A Part-I (HON) Paper=II
MO- 9415376545
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Lecture-04 Date..11-07-20.....

श्री अरविन्दो का राजनीतिक दर्शन सम्बन्धी विचार

श्री अरविन्दो के राजनीतिक विचारों का मूल आधार उनकी आध्यात्मिक आस्था है। राजनीति के आध्यात्मीकरण का उनका प्रयास उनकी अन्तःकरण की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ था। उनके विचारों को विवेक के माध्यम से अथवा वैज्ञानिक कसौटी से नहीं परखा जा सकता। इसके लिए आस्था एवं श्रद्धा की आवश्यकता है। वे यूरोप की बौद्धिक प्रगति को भारत की आध्यात्मिक चेतना में सम्मिश्रित करना चाहते थे। परब्रह्म को जगत के साथ, जीव को आत्मा के साथ, रहस्यवाद को राजनीति के साथ एकाकार कर अरविन्द ने शाश्वत आध्यात्मिक मूल्यों को क्षणिक किन्तु महत्वपूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक गत्यात्मकता के मूल्यों से जोड़ दिया।

श्री अरविन्दो एक उग्रवादी विचारक थे। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में उन्हें उदारवादियों की प्रार्थना एवं याचिका की नीति पसंद नहीं थी। वे भारत की स्वाधीनता के प्रबल पक्षधर थे। इससे कम राजनीतिक लक्ष्य को भारत की महानता के विपरीत मानते थे। उनके अनुसार प्रत्येक राष्ट्र को स्वाधीन रहने का अधिकार है। फिर भारत को पराधीनता में जकड़े रखना और एक घटिया प्रकार की सभ्यता में परिवर्तित करने का विदेशी प्रयास कैसे सहन किया जा सकता है। उन्होंने भारतीयों के अंग्रेजों के साथ सम्बन्धों को ईश्वरीय वरदान नहीं माना था। वे तो उनसे पूर्ण मुक्ति चाहते थे। उदारवादियों की ब्रिटिश न्यायप्रियता में उन्हें निष्ठा प्रसन्न नहीं थी। वे—

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
B.A Part-I (Hon) Paper-II
Mo-9453765 45
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Date..11-07-20.....

निष्क्रिय प्रतिरोध प्रवृत्ति द्वारा भारत की स्वाधीनता का उपदेश दे रहे थे। निष्क्रिय प्रतिरोध से उनका तात्पर्य किसी अहिंसक आंदोलन से नहीं था। उनकी दृष्टि में राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हिंसा का मार्ग भी अपना सकता है। स्पष्ट है कि राष्ट्र गांधी की नैतिक धारणा में उनका विश्वास नहीं था, अपितु वे राष्ट्र की स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानते थे।

श्री अरविन्दो के अनुसार ब्रिटिश आर्थिक शोषण का निराकरण तभी सम्भव था जबकि भारतीय ब्रिटिश माल का बहिष्कार करें और स्वदेशी को अपनायें। उनका कहना था कि तत्कालीन पाश्चात्य शिक्षा का उद्देश्य भारतीयों के स्वाभिमान और उनकी राष्ट्रीय संस्कृति को समाप्त करना तथा ब्रिटिश प्रशासकीय मशीनरी को चलाने लायक क्लर्क तैयार करना था। अतः ऐसी शिक्षा प्रवृत्ति का बहिष्कार कर के राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार आवश्यक था। अरविन्दो ने सरकारी अदालतों के बहिष्कार को इसलिए आवश्यक बताया कि वे ब्रिटिश शासन के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने में सहयोगी थीं और भारतीयों में परावलम्बन की भावना का विकास करती थीं। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि श्री अरविन्दो गांधी के समान अहिंसावादी नहीं थे, अतः उन्होंने निष्क्रिय प्रतिरोध आंदोलन को हर स्थिति में अहिंसावादी बनाने की चेष्टा नहीं की। यदि सरकार हिंसा और दमन पर उतर आये तो निष्क्रिय प्रतिरोधी का कर्तव्य है कि वह सरकार का सक्रिय निषेध करें और यथेष्ट की हिंसा का जवाब हिंसा से दे। श्री अरविन्दो के शब्दों में— " यदि सघनता और मौन स्वीकृति क्रमशः सारे राष्ट्र में वापस ले ली जाये तो भारत में अंग्रेज सत्ता का कायम रखना बहुत कठिन हो जायेगा। यह एक ऐसा हथियार है जो भारत में ब्रिटिश शक्ति की जड़ें काट सकता है और अगर अपेक्षित कुशलता और धैर्य से इसका उपयोग किया जाये तो यह भारत में अंग्रेजी राज्य को समाप्त कर सकता है।"

Scanned with CamScanner